1968 - April

वर्ष ११ अंक १
अप्रैल सन् १९६८

Scanned by CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष ११ अंक १

चैत्र

सं० २०२५

—:o:—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३, पाण्डेय बाजार

आजमगढ़

—:o:—

प्रकाशक

चिरौली सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं० २४१

—:o:—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—:o:—

वार्षिक मूल्य

६-०० रु०

एक प्रति का मूल्य ५० पै०

अमर सन्देश के नियम

१ अमर सन्देश हर माह की २६ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास २८ तारीख को पहुँच जाता है।

२-जिस माह की ५ तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न प्राप्त हो तो अप्राप्ति की सूचना कार्यालय को भेजनी चाहिए।

३-पता परिवर्तन की सूचना जब २० तारीख के पहिले प्राप्त होगी तभी उस माह में पता परिवर्तन होगा अन्यथा अपने डाकखाने से व्यवस्था करें।

४-कोई भी पत्र व्यवहार अथवा मनीआर्डर किसी नाम से न भेजकर केवल व्यवस्थापक अमर सन्देश पाण्डेय बाजार आजमगढ़ उ० प्र० के पते से भेजें सम्पादक श्री विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के नाम पत्र व्यवहार या मनीआर्डर भेजने से उनके कार्यालय में न रहने के कारण प्रायः बड़ी दिक्कत पड़ती है।

५-मनीआर्डर कूपन पर अपना नाम पता तथा रूपये क्यों भेज रहे हैं यह जरूर लिखें।

६-जो पाठक अंक अप्राप्ति की सूचना देते हैं कृपया ५० पैसे के डाक टिकट भी भेजा करें क्योंकि दुबारा अंक भेजने पर कार्यालय को बड़ी हानि उठानी पड़ती है। अंक तो यहां खूब अच्छी तरह जांच करके भेजे जाते हैं। रास्ते में गुम होने पर आपको नहीं प्राप्त होने। आपको केवल ५० पैसे देने पड़ेंगे पर हमारे ऊपर कई लोगों का मिलाकर अधिक घाटा हो जायेगा।

७—अमर सन्देश का वार्षिक चन्दा अग्रिम भेजना चाहिये। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड भेजने से उत्तर में सुविधा होती है। पुस्तकें मगाने के लिये एक सेट या कम पर डाकखर्च १ रू० २५ पै० और पुस्तक का मूल्य अग्रिम आना चाहिये।

८—अन्य जानकारी पत्र व्यवहार या रू० भेजने का पता है

— व्यवस्थापक

अमर सन्देश,

२३, पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

Scanned by CamScanner

जयगुरुदेव

भ्रमर सन्देश

वर्ष ११ अंक १

अप्रैल सन् १९६८

सतगुरु की अखण्ड वाणी, जीवन पथ की कह नी
जीवन सुधारक वाणी, जीवों की भवपार कहानी ॥

हम आये हैं

गुरु के दर्शन करने आये हैं, अपनी अपनी भूल बताने आये हैं ।
जो जो किये कसूर हमने, उन सब को बताने आये हैं ।
पापों की गठरी को हम, हलका करने आये हैं ।
पापों की गठरी को हम, हलका करने आये हैं ।
रो रो कर जो दिन बीता, किसमत को सुनाने आये हैं ।
दिन रात को जो भूलें हमने की, हम उसको सुनाने आये हैं ।
मस्था हमारा कदमों में, इस मस्तक को धरने आये हैं ।
भूल न होगी अब जीवन में, यह फिर से सुनाने आये हैं ।
दुखी भिखारी दर के तुम्हारे, यह कासा लेकर आये हैं ।
खाली हाथ न जायेंगे, विश्वास जमाए आए हैं ।
महिमा भारी सुनी आप की, इसी लिए तो आए हैं ।
हुए जो अन्धे जन्म जन्म से, खुलाने आंखें आए हैं ।
जय गुरुदेव लगावें पार, भिखारी बन के आए हैं ।

Scanned by CamScanner

सतसंग की शिक्षाप्रद कहानियां

१–सबसे बड़ा पुण्य

एक देश में एक साहुकार था। वह व्यापार करके अपना जीवन यापन करता था। समय का चक्र चला और उसका सब व्यापार नष्ट हो गया। यहां तक परिस्थिति बिगड़ी कि खाने तक को कुछ न रहा। बच्चे जब भूख से रोते चिल्लाते तो साहुकार और उसकी पत्नी बड़े दुःखी होते।

उस देश का राजा लोगों के पुण्य खरीदा करता था। जो अपना पुण्य बेचना चाहता उसे धन देकर खरीद लेता।

साहुकार की पत्नी ने परिस्थितियों से मजबूर होकर पति से कहा कि क्यों न चल कर राजा के यहाँ पुण्य बेच दिया जाता जिससे धन प्राप्त होता और बच्चों का पेट भरता।

साहुकार और उसकी पत्नी राजा के दरबार में गये। वहां राजा को खबर दी गई कि एक साहुकार अपना पुण्य बेचने आया है। राजा बाहर निकले। उन्होंने उनसे कहा कि आप लोग इस शीशे के सामने खड़े हो जांय जिससे पता लगे कि आप के पास कौन कौन से और कितने पुण्य हैं। उन पुण्यों में से जो आप बेचना चाहें वह खरीद लिया जायेगा।

साहुकार और उसकी पत्नी उस शीशे के सामने खड़े हुये। शीशे में पुण्य का कोई भी दृश्य न आया। तब राजा ने कहा तुम्हारे पास तो कोई भी पुण्य नहीं है।

साहुकार की पत्नी रोने लगी कि इतने जीवन में हम से एक भी पुण्य न बना। वे रोते बिलखते घर लौटे।

कुछ दिन और बीते। एक दिन किसी ने कुछ खाने के लिये रोटी दी। साहुकार और उसकी पत्नी ने उसका कुछ भाग भूख से छटपटाते बच्चों को दिया और कुछ भाग वे खाना ही चाहते थे कि एक भूख से दुःखी कुत्ता वहां आ पहुँचा। उन्होंने सोचा कि जैसे हम क्षुधा से पीड़ित हैं वैसे ही यह कुत्ता भी है। इसे ही रोटी खिला दें।

यह सोचकर उन्होने रोटी कुत्ते को खिला दी और स्वयं भूखे रह गये। ऐसे ही फिर कुछ समय बीता। तब एक दिन साहुकार की पत्नी ने अपने पति से कहा कि चलें, फिर राजा के यहां चलकर देखा जाय। शायद अनजान में कोई पुण्य बन गया हो तो उसे बेंच कर कुछ दिनों काम चले। अब तो बड़ा ही कष्ट है।

साहुकार और उसकी पत्नी राजा के दरबार में गये। राजा ने उन्हें फिर उस शीशे के सामने खड़ा किया जिसमें पुण्य का दृश्य दिखलाई पड़ जाता था। जब दोनों शीशे के सामने खड़े हुये तो शीशे में रील चलने लगी एक आदमी कुछ रोटियां दे गया। उसमें से कुछ बच्चे खाने लगे। कुछ जो बच रहीं उन्हें साहुकार की पत्नी और साहुकार खाने ही जा रहे थे तब तक एक भूख से तड़पता कुत्ता सामने आया।

शीशे में सब दिखलाई पड़ रहा था। साहुकार और उसकी पत्नी ने सोचा कि यह भी तो भूख से पीड़ित हैं। उन्होंने स्वयं न खाकर उस रोटी को कुत्ते को खिला दिया। यह एक पुण्य बना।

राजा ने पूछा कि इस पुण्य का पूरा फल बेचना चाहते हैं। साहुकार और उसकी पत्नी को यह अन्दाज ही न था कि यह कितना बड़ा पुण्य है। इसलिये उसने कहा कि पूरा ही खरीद लें।

Scanned by CamScanner

तराजू पर एक ओर उस पुण्य का फल रक्खा गया और दूसरे पलड़े पर राजा का सारा धन रक्खा गया तब पर भी पुण्य के फल का पलड़ा भारी ही रहा।

भूखी आत्मा को पेट भर भोजन कराने से बढ़ कर और कोई भी पुण्य इस संसार में नहीं है। इसी लिए भूखे-दूखे को अवश्य भोजन कराना चाहिये चाहे हम किसी भी परिस्थिति में क्यों न हों।

२-संसार के बन्धन की अनुभूति

एक ब्रह्मचारी था। वह छोटे पन से ही अपने गुरू के आश्रम में रह कर विद्या अध्ययन करता था। जब पढ़ लिख कर २५ वर्ष का युवक हुआ तब उसे दुनियां देखने की इच्छा हुई। उसने अपने गुरू से आज्ञा मांगी। गुरू ने कहा कि दुनियां बड़ी अजीब है। तुम भोले भाले युवक हो कहीं फंस जावोगे। इस लिए अकेले दुनियां में जाना ठीक नहीं है। पर वह न माना।

आश्रम से चला तो कुछ दूर पर एक बड़ी बाजार देखा। वहां गया। बाजार देखता ही रहा। तब तक एक बारात आई। उसने सोचा यह क्या है? पास जाते हुये एक आदमी से पूछा यह क्या है?

आदमी ने कहा यह बारात है। उसने पूछा बारात क्या होती है?

आदमी ने बताया कि दुल्हा रहता है विवाह होता है। वह पूछने लगा दुल्हा किसे कहते हैं? विवाह क्या होता है?

इस प्रकार चूंकि उसके लिये यह सब चीजें नई ही थीं इस लिये वह अनेक प्रश्न पूछने लगा। आदमी खीझ गया कहने लगा उसी के साथ हो लो तो देख कर सब समझ में आ जायेगा।

ब्रह्मचारी बारात के साथ हो गया। उसे सब कुछ देखते देखते रात के बारह बज गये। जब उसे कुछ अपना ध्यान आया तो पास के एक कूयें की जगत पर सो गया।

रात्रि में उसने स्वप्न देखा कि वह दुल्हा बना है। उसका विवाह हो रहा है। बारात निकली है। दुल्हन आई है। उसके बगल में वह सोई है और कह रही है जरा और खिसको। इतने में कूयें में झम्म से गिरने की आवाज आई।

लोग कूंये की ओर दौड़े। किसी प्रकार ब्रह्मचारी कूयें से निकाला गया। उसे बार बार अपने गुरू की याद आई। उन्होंने उसे सहेजा था कि दुनियां बड़ी विचित्र है इसमें अकेले न जाना नहीं तो फंस जाओगे। गुरू का सहारा जरूरी है।

ब्रह्मचारी ने लोगों से कहा कि मेरे समझ में नहीं आता कि जब मैंने स्वप्न में शादी किया तो यहां कूयें में गिरा। तो जो लोग सचमुच में शादी किये हैं वे लोग कहां गिरते होंगे तथा उन्हें कौन कैसे निकालता होगा?

सचमुच में यह विचारने की बात है। हर एक के दैनिक जीवन की कि जब तक विवाह नहीं हुआ रहता कैसी उमंग रहती है। विवाह के बाद जहां दो बच्चे हुये फिर कमर तोड़ परिश्रम और वही आटे, दाल के भाव में यह बहुमूल्य जीवन समाप्त हो जाता है। तब न ईश्वर की याद आती है न परमार्थ की कमाई होती है। केवल सन्त सतगुरु जब अति कृपा करके अपनी शरण देते हैं तो जीव कुछ चेतता है होश में आता है। तब वे ही इसे इस भव कूप से निकालते हैं।

Scanned by CamScanner

आवश्यक सूचनायें

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पूज्य स्वामी जी महराज का दक्षिण भारत का पर्यटन कार्यक्रम बड़ा ही महत्वपूर्ण तथा अनेकों लाभ पहुँचाने वाला प्रारम्भ हो गया है। इस अवसर पर हर सतसंगी भाई बहिन का कर्तव्य है कि वे अपने अपने स्थान पर रहते हुये गुरू के इस महान संकल्प में योग दें। जो धन से सेवा करना चाहें वे अपना योगदान भाई उदय नरायन लाल चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर, मथुरा के पते पर भेज दें। मन और सुरत की सेवा आप अपने अपने स्थान पर रह कर अवश्य करें। अर्थात नियम पूर्वक सुमिरन, ध्यान और भजन प्रतिदिन अवश्य करें। जब तक पर्यटन कार्यक्रम चले हम सब लोगों को परमपिता स्वामी जी महराज का आदेश है कि हम लोग ब्रह्मचर्य का पालन पूरे तीन माह तक अवश्य करें तब साधन भजन नियम से करने पर हर एक को लाभ अवश्य प्राप्त होगा। पर्यटन का कार्यक्रम निम्न है:—

दक्षिण भारत पर्यटन कार्यक्रम

प्रथम चरण

१	जयपुर	९ मार्च से	१५ मार्च तक
२	सीकर	१७ ,,	१८ ,,
३	अजमेर	२० ,,	२२ ,,
४	जोधपुर	२४ ,,	२७ ,,
५	विजय नगर	२९ ,,	३१ ,,
६	भील वाड़ा	१ अप्रैल से	३ अप्रैल तक
७	एकगांव	५ ,,	६ ,,
८	चितौड़	८ ,,	१० ,,
०	नीमच	१२ ,,	१४ ,,
१०	रतलाल	१६ ,,	१९ ,,
११	इन्दौर	२१ ,,	२८ ,,

दूसरा चरण

१	दाहोद	१ मई से	४ मई तक
२	गोधरा	६ ”	९ ”
३	अणन्द	११ ”	१४ ”
४	अहमदाबाद	१६ ”	१९ ”
५	बड़ौदा	२१ ”	२४ ”
६	सूरत	२६ ”	२९ ”
७	बम्बई	१ जून से	६ जून तक
८	नासिक	८ ”	११ ”

अमर सन्देश का यह पहला अंक आप के सामने प्रस्तुत है। वर्ष भर घर बैठे सतगुरु के अमर सन्देश के प्राप्त करने के लिए आप शिघ्र ६) वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से भेजें। —व्यवस्थापक अमर सन्देश, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़ (उ० प्र०)

गृहस्थी में हमारा जीवन

(गोरखपुर । प्रातःकाल दिनांक ४ नवम्बर १९६७ ई०)

हम जलते रहते हैं

गृहस्थाश्रम में हमारा जीवन बड़ा ही सुखमय शान्तिमय होना चाहिये था । हम अपने मान बड़ाई, अपनी समझदारी यानी अपनी ओछी समझ से कार्य करते हैं तो दूसरों को तकलीफ हो जाती है फिर अशान्ति का दर्शन होता है। बाहर जो हम काम करते हैं, जो भी करते हो चाहे वह खेती हो, चाहे व्यवसाय हो चाहे नौकरी उसमें हमको अशान्ति मिली। फिर जब घर में आये तो कभी बच्चों में कभी स्त्री में कभी सामानों में किसी न किसी कारण से अशान्ति मिली अर्थात बाहर भी जला और अन्दर भी जला फिर क्या होगा।

पत्नी से भी राय लें

जो भी आप कार्य करते हैं आपको चाहिये कि इन देवियों से भी राय लें। मकान बनाते हैं, जमीन लेते हैं अथवा और कोई काम करते हैं थोड़ा राय घर में भी लेते रहें तो ठीक होगा। साधारण भोजन की बात को ही लेकर आप कलह मोल ले लेते हैं। आपको थोड़ा सा पूछते रहना चाहिये कि क्या खाना चाहते हैं क्या नहीं। जिस किस्म की राय न हो मत करें।

तब सब काम ठीक होगा

घर का सब काम तब ठीक होगा। आप का भोजन सात्विक शुद्ध होगा। आपकी बात व्यवहार सुन्दर होगी। फिर आपके बच्चे भी सुन्दर होंगे जिनको आपने पैदा किया है।

ब्रह्मचर्य का पालन करो

बहुत सी स्त्रियां यह मुझसे कहती हैं कि मेरे पतिदेव नहीं मानते जबरदस्ती व्यवहार करते हैं। भाई, क्यों आप विपत्ति खरीदते हैं । थोड़ा संयम से आपको काम लेना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन थोड़ा करना बहुत आवश्यक है। ये कहती हैं कि मांस मछली मत खाओ फिर आप उद्दण्डता करते हैं फिर अशान्ति होती है । यानी सुखमय जीवन का एकदम आप ने अभाव कर दिया।

बातों पर अमल करो

जब तक आदमी चाहे सतसंगी हो या गैर सतसंगी महात्मा की बातों पर अमल नहीं करता तब तक वह शान्ति से दूर रहता है। अमल करने से सभी काम आपके ठीक ठीक होते हैं । बात चाहे छोटी हो अथवा बड़ी छोटी से छोटी बात के

Scanned by CamScanner

ऊपर भी अमल करना चाहिये। यदि आप ऐसा करने लग जांय तो फिर आप का अलगाव पन, दिल का दरार खतम हो जायेगा। जहां पत्नियों का प्रेम पूर्ण आनन्द है। प्रेम रूपी आनन्द में ही वास्तविक शान्ति है।

धर्म से अलग नहीं

धर्म से कोई चीज अलग नहीं है। आप धर्म को, सत्य को साथ लें लें तो आपके पास सब कुछ है लोग धर्म को अथवा सत्य को समझते नहीं। आज धर्म-सत्य को लोगों ने शब्दों में मान लिया। धर्म की जरूरत लोगों ने हटा दिया। कुछ वर्षों पहले महात्मा यह आवाज लगाते थे कि होशियार हो जाओ और अब वह वक्त आ गया।

प्रारब्ध पर विश्वास करो

इस समय जहां दस खर्च करने से आपका काम चल जाय वहां बीस खर्च करने की जरूरत नहीं। सीमित दायरे में अपने प्रारब्ध को समझें कि यही मेरे प्रारब्ध में थे। हम अपने पर विश्वास करने लगते हैं तो आनन्द सुख मिलता है। स्त्री आपको मना करती है कि यह काम आपको नहीं करना चाहिये तो आपको मानना चाहिये। शादी के वक्त में आपने प्रतीज्ञा किया था कि हम एक दूसरे के बातों को मानेंगे। राय से काम करेंगे।

एक दूसरे का सहयोग दो

बहुत सी स्त्रियां ऐसी हैं जो सत्संग में नहीं आना चाहतीं और पति को भी अलग रखती हैं और यदि पति आता है तो मना करती हैं इसका कारण है कि वे सोचती है कि पति कहीं भाग न जांय या महात्मा कहीं कोई नुकसान न कर दें। जो स्त्रियां सत्संग से दूर रहती हैं उनको ये दो तीन बातें भ्रम में, संसय में डाले रहती हैं। अगर ये सत्संग में आने लग जांय तो इनका संसय दूर हो जायगा और ये समझ जायेंगी कि महात्माओं के दरबार में किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता और बहुत सुख आनन्द मिलता है। यह स्त्री पुरुष दोनों को समझ लेना चाहिये। मार मीट से काम नहीं चलने का है।

भ्रम छोड़ने पर

हमारे पास कितने स्त्री पुरुष आये तो बहुत २-२ वर्ष और ४-४ वर्ष आगे पीछे आये। पहले स्त्री आयी तो ४ वर्ष बाद पुरुष आये और अगर पहले पुरुष आये तो बाद में फिर स्त्री आयी।

नियम से साधना करें

तो कहने का मतलब यह है कि आप को किसी तरह का कोई झगड़ा मारपीट नहीं करना चाहिये। जो उपदेश दिया जाता है जो नाम की कमाई करने की साधना बतलाई जाती है उसको नियम से रोजाना आप करें। जब आप करने लगेंगे तो साधना ठीक होगी और आनन्द आयेगा। भीतरी आनन्द और बाहरी आनन्द दोनों मिलेगा तकलीफों से छुटकारा पा जायेंगे।

तकलीफ पुराने कर्मों का फल है

जो तकलीफ आपके ऊपर है यह तो पुराने कर्मों के कारण है और कुछ तकलीफें हैं जो इस जन्म की हैं। जब आप सत्संग में आ जाते हैं तो करोड़ों जन्मों की तकलीफ को एक ही जन्म में महात्मा खत्म करते हैं फिर आप चिल्लाते क्यों हैं। कोई तकलीफ आप को हो जाती है तो आप तुरन्त हल्ला करने लगते हैं कि हमारे ऊपर दया कीजिये और कृपा नहीं करते। अरे भाई, आपको थोड़ा समझना चाहिये आप दया यही मांगते हैं कि आपको तकलीफ से जल्दी से छुट्टी

मिले। तो फिर आना पड़ेगा। क्योंकि जब तक सब कर्मों को खतम नहीं किया जायेगा तब तक जीवात्मा यहां से निकल ही नहीं सकती। आप थोड़ी से तकलीफ से घबड़ाते हैं, धीरज छोड़ देते हैं तो कैसे काम होगा ये सूक्ष्म बातें हैं आप को समझनी चाहिए।

गुरू दया देते हैं

जब लड़का रोता है तो माता अगर दवा नहीं दे सकती तो अपने प्यार से राहत आराम तो देती है। इसी तरह से किसी के सामने हम रोते हैं तो कुछ न कुछ तो वह देता ही है। आप जो भी दिन रात करते रहते हैं वह मैं कोई बहरा थोड़े ही हूँ कि सुनता नहीं कुछ न कुछ तो ताकत दी ही जाती है परन्तु क्या दया ही न दी जाय। समझने की बात है महात्मा यह दया करते हैं कि करोड़ों अरबों वर्षों जन्मों के तकलीफ को खत्म करते हैं। और आप दया मांगते हैं कि तकलीफ हो रही है भाई अगर आप इधर न आये होते तो आप को हमेशा ये तकलीफ भोगनी पड़ती पूरा की पूरी। आप को यह मार्ग दिया गया क्या इसको आप कम दया समझते हैं।

अन्तर में प्रार्थना करनी चाहिये

तकलीफ आप के ऊपर कोई बीत रही है तो आप अपने तरफ से अन्तर में प्रार्थना करो करना भी चाहिये लेकिन अधीर मत हो क्योंकि जो गुरू है वह तो सब कुछ देखता है जो भी आप को दुःख सुख मिलता है वह सब यो गुरु के मौज से है फिर आप को गुरू ने जो कहा उसको करना चाहिये क्योंकि जिसको जैसे रखने में अच्छा समझता है वैसे गुरू रखता है आप अपने कर्मों के बारे में कुछ नहीं जानते गुरु सब कुछ जानते हैं।

गुरू को शारीरिक कष्ट होता है

आगे स्वामी जी महराज ने यह कहा कि बुखार तो मुझे भी आता है तकलीफ मुझे भी होती है, थकावट हमें भी आती है। शरीर जैसे जैसे पुराना होगा शरीर के अवयव ढीले होंगे थकावट आयेगी ही, परन्तु उस अमर ज्ञान में अथवा आनन्द में थकावट नहीं आती। तकलीफ आये तो बार बार तकलीफ आने से तुमको क्या फायदा होगा इसलिए जैसी भी स्थिति हो उसमें गुरु का सुकराना करते हुये अपना साधन भजन सुमिरन बराबर करते रहना चाहिए। हर तरह की तकलीफों से छूटने का एक ही रास्ता है जो आप को दिया गया है। आगे स्वामी जी ने गोस्वामी जी के वाणी का अर्थ समझाया—

गुरु कहें खोल कर भाई,
लग शब्द अनाहद जाई।

जो परमात्मा के मुखारविन्दु से निकलता है वह शब्द नाम है वह अनहद है। जो हाथ के, पैरों के साज के जो बाजे हैं वह अनहद है। जो बन्द कभी नहीं होता। जो निरन्तर बजता रहता है जिसमें निरन्तर अमृत टपकता है वह अनहद नाद के द्वारा यहां लाई गई। जब महात्मा आते हैं तो इस नाद के साथ सुरत का सम्बन्ध कर देते हैं। शुरू शुरू में यहां पर कलयुग में कबीर ने इस भेद को प्रकट किया। जो लोग शुरू में नहीं माने वे अपने आत्माओं का कल्याण नहीं कर सके। गुरू समझाते हैं कि क्यों नहीं लगते नाम के साथ। इस किराए के मकान में वह नाद हर समय बजता है उसके धार से जुड़ो जिस धार को पकड़ कर उतारे गए उसी धार को पकड़ कर वापस भी जाना होगा। उस नाद में प्रकाश है। जब नाद को सुनेंगे तो अन्दर में प्रकाश हो जायेगा। इतनी सरल भाषा में महात्मा समझाते हैं कि स्त्री पुरुष

Scanned by CamScanner

पढ़े अनपढ़ सभी समझते हैं। मैं इनसे पूछता हूँ कि कुछ समझ में आता है तो ये कहती हैं कि यदि समझ में नहीं आता और कुछ देखती सुनती नहीं तो आजकल खेतों का काम छोड़ कर यहां टाउनहाल में हम क्यों आती। तो गुरु जब जब आते हैं तो ये काम बराबर करते हैं। दूसरा रास्ता ऊपर ले जाने का कभी नहीं रहा। हर समय में यही रास्ता रहा। उबारने वाला यदि कोई रास्ता है तो वह नाद ही है।

बिन शब्द उपाय न दूजा,
काया का छूटे न पूजा।

जब तक इस काया का ताला नहीं खुलता तब तक जीव किसी उपाय से निकल नहीं सकता। और ताला तभी खुलेगा जब नाम यानी शब्द के साथ जुड़ जायेंगे और यह काम सुरत को नाम के साथ जोड़ने का गुरु करते हैं। इसलिये जिन्होंने रास्ता पा लिया है उन्हें हट करके कमाई कर लेनी चाहिए।

घर में घर गुरु दिखलावें,
धुन शब्द पांच बतलावें।

कहते हैं कि गुरु सबका भेद बताते हैं। नाम का, स्थान का, रूप का पूरा भेद गुरु देते हैं। अन्दर में दरवाजा है वहां सुरत को गुरु पहुँचाते हैं और आगे ले जाते हैं। और साथ साथ ले जाते हैं सुनाते भी हैं, दिखाते भी हैं और कितना प्यार है कि साथ साथ ले जाते हैं। सच्च खण्ड अखण्ड देश जहां असत्य नाम है ही नहीं वहां गुरु ले जाते हैं। वह घर इस घर के अन्दर गुरु बताते हैं। २ वर्ष और ४ वर्ष में सभी को जरूर चढ़ जाना चाहिये और जिन्होंने मेहनत किया कितने ही चढ़ गये जो यहां बैठे हैं। आप आलस करेंगे तो आप पीछे पड़ जायेंगे। इसलिए अगम भेद को पाकर कमाई मेहनत और मशक्कत के साथ करने की जरूरत है। हम आपके लिए इतनी मेहनत करते हैं और मेरे लिए समझ कर ही इतनी थोड़ी सी मेहनत आप कर दीजिये आप सब दुखों से छूट जायेंगे।

धुन में अब सुरत लगाओ,
इस घर से उस घर जाओ।

इस चौरासी के फजीहत तकलीफ से बचना है तो जिस घर को छोड़ कर आप यहां आये उस घर को धुन शब्द नाम को पकड़ कर उलट चलो। मृत्यु और जन्म के समय ये समझदार आदमी, बड़ी ही तकलीफ होती है। महात्मा बार बार समझाते हैं कि वह नाम वह देश अगम और अपार है बहुत बड़ा है हर जगह पर वह आवाज रहती है पर तू उससे दूर रहता है फिर कल्याण कैसे होगा। इसलिये होश कर, चेत कर और नाम के साथ जुड़ कर उस अपने निजी घर को चले चलो जहां से फिर कभी आना नहीं होता।

वह घर है अगम अपारा,
दसवें के पार निहारा।

सत्तलोक जो तुम्हारा घर है वह आंखों के नीचे नहीं आंखों के परे पिण्ड के परे अण्ड के परे स्वर्ग बैकुण्ठ सबके परे सबसे ऊंचा देश है वह दसवें द्वार के परे है वहां चलो। जिस कारण भी जैसे भी तुम्हें लाया गया और फंसा लिया गया जैसे एक बच्चा है जब दूसरी जगह ले जाते हैं तो नहीं जाता है फिर मिठाई देकर कभी खिलौना देकर धीरे धीरे उसे फुसला कर फंसा लिया जाता है। फिर बच्चा वह पुराना घर भूल जाता है और नये घर को ही अपना सब कुछ मानता है। फिर पुराने घर को नहीं जाना चाहता वही हाल तुम्हारा है। जो आपको लाया उसने बड़े परेशानी से आपको रखा लालच दे देकर फंसा लिया। अब

जैसे जैसे फंसे वैसे ही वैसे फंसावट की वस्तुओं को महात्मा तोड़कर फेंकते जाते हैं फिर आपका छुटकारा होगा। जितनी परेशानी आने में थी उतनी परेशानी जाने में है। एक एक चीजों से अलगाव करना यह मामूली बात नहीं। बिना सन्तों के कुछ नहीं हो सकता।

बिन मेहर गुरु नहीं पावे,
बिन शब्द हाथ नहीं आवे।

कोई कितना ही दुनियां में ग्रन्थों को रट ले विद्वान हो जाय या कुछ और कर करा ले लेकिन बिना गुरु दया के नाम नहीं मिलेगा और जब शब्द नहीं मिलेगा तो कल्याण नहीं होगा। हम लोग बिना मेहर दया के चाहते हैं यह नहीं कभी हुआ और न कभी होगा। यह वस्तु तो तभी मिल सकती है जब गुरु की कृपा होगी।

सुरत खेंच चढ़ाओ गगनी

धूप और बत्ती से कुछ न होगा। आरती हवन अपने मन की इन्द्रियों की करनी होगी। ये जो आंख, कान, नाक, जीभ वगैरह के फूल व पत्ती लगे हैं इनका हवन करो। इस संसार के करोड़ों लोग यदि इसका हवन करें तो करोड़ों ठीक हो जाय। मुरीद बन कर शिष्य बन कर दया तो महात्मा से लेना ही होगा सारे महात्मा कह आये कि बिना दया के नहीं मिलता। और हम तो आप के सामने हैं, सामने यह फैसला करते हैं कि इसमें दो राय नहीं। दुनियां के लोगों के सामने दुनियावी वस्तुओं के लिये २ किलो चीनी या तेल के लिए या नौकरी के लिए या कुछ और के लिए आप इतना दीन गरीब बन जाते हैं इतनी इसकी जी हजुरी करते हैं और भिखारी बनकर उसकी दया मांगते हैं जहां आपकी इच्छा पूरी भी नहीं होती और महात्माओं के दरवाजे पर इतनी बड़ी दौलत जो देता है वहां आप अपने सभी अकड़ों को लेकर आते हैं। जरा सोचने की बात है। जिस दरबार में यदि तनिक भी गरीब दीन बन गये तो सदा सदा के लिये छुटकारा मिल जाता है वहां तो आप अकड़े रहते हैं और जहां रोने धोने की जगह है वहां दीन होते हैं। अरे रोओ गरीब बनो तो महात्मा के दरवाजे पर यहां सुनवाई होगी तो सब जगह सुनवाई होगी और यदि महात्मा की दया नहीं तो कहीं चले जाओ सुनवाई नहीं होती. सब कुछ गुरु की दया से ही होता है।

मन चञ्चल थिर न रहावे,
चित्त निर्मल कब हो आवे।

जिनको शब्द नहीं मिला उनका चित्त चञ्चल और अपवित्र रहता है चित्त हर वक्त भागता रहता है गोस्वामी जी ने लिखा है—

बिनु पग चले सुने बिन काना

यह मन है। यह सांपारिक भोगों का रसिया है। यह परमात्मा के बारे में स्वामी जी ने नहीं लिखा है। जहां भगवान की बात आई वहां मनुष्य रूप में उस शक्ति का वर्णन किये हैं और ईश्वर तो अपने जगह पर है। दुनियां के लोग परमात्मा के लिए अर्थ करते हैं परन्तु उन्हें समझ लेना चाहिये। और अब तो ये मानने लगे और खुद कहने लगे कि शिवनेत्र है। दिव्य दृष्टि होती है। आप मुझसे क्या पूछेंगे अब तो इन्हीं से आप पूछ लीजिये कि क्या कैसा है कहां है। परमात्मा कहां है, जो भी पूछना हो ये ही सब आपको बता देंगे यहां तक आपको अब आना ही नहीं पड़ेगा। महात्माओं को और उनके रास्ते पर चलने वालों को किसी का चाहे वह कोई हो किफर गम नहीं रहता वे सदा सत्य को जो आंखों अपने देखते हैं कहते हैं। पोथे भी लोगों ने कहा,

Scanned by CamScanner

अब कह रहे हैं आपके सामने और आगे भी कहेंगे।

सुरत शब्द कमाई करना,
सब जतन दूर अब धरना।

कभी नागा मत करना। योग यानी किसी से मिल जाना अर्थात परमात्मा से सुरत को जोड़ना इस कार्य को रोज करना जो गुरु ने तरीका दिया उसकी कमाई खूब करना। दुनियां के और जितने काम हैं उसका जतन मत करो। उनको अलग रख देना और इस काम को तुम कर लेना। इस कमाई का फल जल्दी मिलता है इसका जतन करो बाकी जतन अलग करो। नहीं तो—

'जतन बिनु मिरगिन खेत उजारे'

जतन नहीं होगा कमाई नहीं होगी साँसों की पूंजी खतम हो जायेगी फिर कुछ रह नहीं जायेगा पछताना और रोना ही रहेगा।

निश्चय दृढ़ इस पर धरना,
आलस कर कभी न फिरना।

कहते हैं निश्चय, यानी पक्का इरादा करके आलस त्याग कर कमाई करो। निश्चित कर लें कि आज ३ घण्टा हम यह काम करेंगे और जुट जाँय और दृढ़ निश्चय से करें। आलस्य किया। कहा अच्छा अभी कर लेंगे, लेट गये नींद में आ गये। समय बीत गया। इसी तरह सुबह से रात और रात से सुबह बीत जाता है और कुछ नहीं बनता। तो ऐसा नहीं अपना इरादा पक्का करके साधन पर बैठो और गुरु की याद कर घाट पर इन्तजार करो जब घाट पर उस जगह को साफ कर दोगे तो मालिक उस साफ जगह पर आकर बैठेगा।

यह सार सार सब गाया,
सन्तन मत भाष सुनाया।

सबका सार यानी सार का सार यह है। एक ही बात जिसको सभी सन्तों ने दादू, पल्टू, कबीर रैदास, मीराबाई, गोस्वामी जी, भीखा साहब, चरनदास जी वगैरह वगैरह सभी ने अपने अपने समय में गाया। जो सन्त पद के नीचे स्थानों के हैं वे किसी को नहीं ले जा सकते। योगी योगेश्वर यति मुनी तपस्वी सन्यासी पीर और और औतारी शक्तियां कोई भी जीव को यहां से ले जाने का काम नहीं करती। यदि कोई ले जा सकता है तो वह सन्त ही हैं। और सन्तों का यह मत है जो गोस्वामी जी महराज ने यह गाया।

अमर सन्देश

यह नये वर्ष का नया अंक सतगुरु के अमर सन्देश से ओतप्रोत आपकी सेवा में प्रस्तुत है। कृपया इसके प्रचार प्रसार में सहयोग दें। जिन भाइयों ने किसी कारण से पिछले वर्ष का वार्षिक चन्दा न भेजा हो वे शिघ्र भेज दें तथा नये वर्ष का चन्दा भी शिघ्र भेजें।

—व्यवस्थापक

Scanned by CamScanner

देखो ऊपर दृष्टि पसार

प्रभू तुम्हें बुला रहा है,
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
काम काज में मन को लगाकर,
विषय वासना में हम फंसकर ।
पागल हो रहे अपने आप ।
आज्ञा चक्रों में होती झनकारें ।
होते आनन्द परम प्रकाश ।
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
काम क्रोध में हम लड़ मर कर,
अहं भाव में हम गिरकर ।
हो गये हम घर बे घर बार,
जोतें जलती अगम अपार ।
सीतल होते अपरम्पारा,
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
चौरासी में बहुत सताये,
भोग कर्म मानुष तन पाये ।
अब सब कर लो अपना कार,
बजे बंधाई नाना भांति ।
आनन्द करें सभी मंगल में,
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
आखें अन्दर खुलें तुम्हारी,
देखो खुल खुल नगरी अपनी ।
कर्मों से होगा निर बार,
ब्रह्मा विसनू करें अनन्दा ।
शिव भी करते सिंधार,
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
अन्ड पिन्ड ब्रह्माड के ऊपर,
कहां है अपना घर बार ।
बिन सतगुरु नहिं पावो भेदा,
बिना मेहर नहिं जावो घर को ।
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।

अब तो मानो कहना मेरा ।
चौरासी का बचा लो फेरा,
अब मत चूकू औसर अपना ।
तुमने पाया अपना दांव,
देखो ऊपर दृष्टि पसार ।
जय गुरुदेव कहें तुमसे,
तुम आवो सब हिल मिल कर ।
तुमको देवें शिव आंख,
इससे मिले परम भण्डार ।

अरे ब्राह्मण क्यों मछली खाओ

जीव दया का था धर्म तुम्हारा,
पूजा पाठ और धर्म प्रचारा ।
उपदेश तुम्हारे थे चरित्र के,
विश्व तुम्हारा करता था आधारा ।
आज तुम्हारा हुआ अपमाना,
घर घर डोलो भीख आधारा ।
पढ़ते थे तुम परम उच्च विद्या को,
आत्म विद्या भी तुम आधारा,
आकर तुमरे सब गुण लेते थे,
नत मस्तक तुमरे आधारा ।
दर्शन कर प्रणाम तुमको,
जो तुम कहते सो सब आधारा ।
अब जाओ गुरुदेव के पास,
वहां सब प्रकार सनमान आधारा ।
फिर से होगा अति तुम्हरा सनमान,
जो तुम जयगुरुदेव वचन अधारा ।
मत तुम डरो गुरुदेव नाम से,
यह गुरुदेव नाम भगवान पुकारा ।
दया लेव तुम अपनी फिर से,
मत करो कभी जीव आहारा ।
मत डरो गुरुदेव नाम से,
यह तुमको कर देगा भो के पारा ।

Scanned by CamScanner

मनुष्य जीवन और परमार्थ

(चौपाटी, बम्बई का सतसंग १० मई '१९६७)

मनुष्य जीवन परमात्मा प्राप्ति के लिये मिला जिसमें बैठी हुई प्यासी आत्मा चाहती है कि पिता मिल जाय। जो भी विद्यायें हमने प्राप्त किया उनसे न कोई शांति मिली न इस जीवात्मा के लिए कुछ मिला। यह सब खाना पीना, सोना आदि इन ५ तत्वों वाले किराये के मकान के लिए किया तथा यह सब अज्ञानता में किया। कहां से आए, कहां गए, किसने आप को किराये के मकान से निकाला, तुम सब स्त्री व पुरुष से पूछता हूँ कि आप ने इस जीवात्मा के लिए भी कभी कुछ समय दिया।

परमात्मा का ज्ञान

सारी भाषाओं का ज्ञान (त्रिकुटी पर इशारा करते हुए) जिस स्थान पर पूर्ण हो जाता है, वहां से महात्माओं का ज्ञान शुरू होता है। अगर यह विद्या, विज्ञान, पुस्तकों व मन्दिरों से मिलता तो हमने कबका जान लिया होता। बुद्धि विद्या अंधकार की विद्या है और जब तक आत्म विद्या की तरफ नहीं चलेंगे तब तक मनुष्य को शांति नहीं मिलेगी। एम० ए० की डिग्रियां लेकर, परमात्मा की प्राप्ति करना यह असम्भव है। उसी एक निशाने पर दो व्यक्ति, एक सिपाही अनपढ़ दूसरा एक पढ़ा लिखा आफिसर दोनों एक ही निशाने पर बंदूक का निशाना बनायें तो दोनों का निशाना बनता है। उसमें पढ़े लिखे का सवाल नहीं आता। आध्यात्मिक विद्या इसी तरह है। बाइबिल वेद पुरान शास्त्र वगैरह के पढ़ने से परमात्मा मिलना आसान है। मन्दिर, मस्जिद तीरथ वगैरह हर स्थान मौजूद हैं किन्तु परमात्मा नहीं प्राप्त करा सकते। अगर वस्तुएँ परमात्मा को प्राप्त करा देंती तो महात्माओं के आने की जरूरत नहीं होती।

जीवात्मा चेतन को पाती है

चेतन जीवात्मा चेतन परमात्मा को प्राप्त कर सकती है। अगर जड़ से परमात्मा की प्राप्ति हो जाती तो महात्मा अपनी अपनी पुस्तकों में ऐसा ही लिख देते।

अब जीवनयापन ही सब कुछ

हम सभी सनातन पुरातन धर्म को भूल गए। अब इस समय लोगों के सामने अपने बच्चों के पालन–पोषण की समस्या सामने आ गई है। परमात्मा की बात लाखों कोस दूर है। जब हम उनको समाज के कानून के अनुसार सच बोलने को कहते हैं तो उससे वह दूर भागते हैं। माँ, बाप, गुरु मास्टर स्कूलों में पढ़ाना भूल गए। वह पैसे इकट्ठे करने का साधन बना लिए।

कुछ जन्म ले रहे हैं, कुछ मर रहे हैं और ऐसी ही दुनियाँ चल रही है और तुमको कुछ मालूम नहीं कि तुमको जन्म किसने दिया, तुम क्या चाहते हो। तुम कौन हो। यह पता नहीं लेकिन तुमको हर रोज के लिए शरीर पालन–पोषण के लिए वस्तुएं जरूर चाहिये।

बुद्ध को विचार से ज्ञान हो गया

बुद्ध का प्रमाण देते हुए, सतगुरु दयाल ने कहा कि बुद्ध भगवान, तो बुड्ढे की हालत देख कर ही ज्ञान हो गया।

पहली अवस्था में बचपना दूसरे में जवानी, तीसरे में लकड़ी के सहारे चलना आदि अनुभव उनको अपने लिए हुआ छोटी उमर में ही, अपने चेतन को चेतन के साथ मिला दिया था। वह परमात्मा बन गए तथा दूसरे जीवात्मा को मुक्ति दिये। जब कभी लोग इस दुनियां में दुखी होते हैं तो इस दुनियां में ऐसी शक्तियां आती हैं। लेकिन उसको कोई पहिचान नहीं पाता है। जब तक यह सृष्टि चलेगी तब तक यह शक्तियां आती रहेंगी तथा प्रमाण पत्र पुस्तकों के रूप में छोड़ते जाएंगी जो इन्हें परमात्मा प्राप्त करने का संकेत करती रहेंगी।

नाम से जुड़कर परमात्मा मिलेगा

उस परमात्मा के नाम से, जो शब्द आकाशवाणी रूप में आ रही है, यह आत्मा उससे संबंध कर शब्द रूप होकर जीवन मरण से मुक्त हो जाती है। शब्द वह है जिसके आधार पर सारे ब्रह्मांड खड़े हैं जर्रा–जर्रा स्थिर है। शब्द चेतन है उसके सिवाय और कुछ भी उपाय नहीं है। नाम की महिमा पर ही टिकाऊ हैं। हम उस शब्द को शरीर में पकड़ सकते हैं। जिसको अन्य अन्य भाषा में अन्य अन्य महात्माओं ने अन्य अन्य शब्दों से पुकारा। मुसलमान, कलमा, हिन्दुओं ने आकाशवाणी, वेदवाणी, इसाईयों में Sound आदि नामों से संबोधित किया है।

लोग परमात्मा को मरने के बाद पाने की आशा में बैठे हैं। लेकिन उनको मालूम नहीं है कि यह मनुष्य तन जो किराये का है वह भाग्य से एक बार परमात्मा प्राप्ति के लिये मिला है। अब शुभ अशुभ कर्मों के अनुसार चोरासी लाख योनियों में डाल दिया और फिर यह नर तन पाना दुर्लभ हो जायेगा। स्त्री–पुरुषों को यह मालूम नहीं कि यह जन्म फिर न मिलेगा।

पढ़ने लिखने से परमात्मा मिले ऐसा नहीं

सारी किताबें वेद पुराण, बाईबिल, कुरान आदि लिखे हुये काली अक्षरों को आप याद करलो तो भी तुमको दिव्य दृष्टि नहीं मिलेगी। जब तक उनसे नहीं मिलोगे जिनकी दिव्य–दृष्टि खुल चुकी है। अभी शरीर में तीसरी आंख कहां है यह निश्चित मालूम नहीं है : इस जीवात्मा को प्रकाश मिलता है उसके सामने वह प्रकाश आत

हैं कि जिसके सामने बड़े बड़े चांद सितारे लज्जित हो जाते हैं। उधर बड़े बड़े बगीचे महल देवी, देवता, सड़कें, जैसे चिड़ियां आकाश में उड़ा करती हैं दिखाई देते हैं। उधर कभी अंधेरा नहीं होता है। प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। कोई झाड़ू वाला भंगी उधर नहीं दिखाई देता है क्योंकि उधर गंदगी नहीं है। सुगंध ही सुगंध है। हीरे जवाहिरात ऐसे पृथ्वी पर बिछे हुए हैं जैसे इधर आसमान में तारे हैं। यह सब इस शरीर से मरने के पहिले पाए जाते हैं।

अन्दर में परम प्रकाश है

हम सभी लोग अवैधानिक कार्य करना शुरू कर दिए और उसका भुगतान योनियों में करना पड़ेगा। मीरा कबीर रविदास तुलसीदास आदि ने मरने के पहिले परमात्मा को प्राप्त किये और अपना प्रमाण पत्र धर्म ग्रन्थों के रूप में छोड़ गये। उस प्रकाश को सब ने पाया। बुद्ध भगवान के मंदिर में अब भी परम प्रकाश चिराग के रूप में जलता है। मुसलमानों के मसजिद व गिरजा घरों में भी रहता है। यह मंदिर उन महात्माओं के थे जिनके अंदर प्रकाश जल गया था। लेकिन आप लोग भूलकर अपने बनाये हुये मंदिर मसजिदों में काल्पनिक चिराग जलाया करते हैं। जो कि भगवान के बनाये हुये मंदिर हैं इनमें प्रकाश नहीं करते हैं। उन मंदिर व मसजिद व गिरजा घरों में घंटे बजाने की प्रथा है जो कि भगवान के बनाये हुये इस किराये के मकान मंदिर में निरंतर सुनाई दे रहा है। महात्माओं ने अपना सम्बन्ध अपने चेतन आत्मा द्वारा इसमें बज रहे भगवान के बनाये हुये मंदिर से जोड़ा था, जिसे प्राप्त कर सदैव के लिये जीवन मुक्त हुये।

उस प्रकाश को पाकर सारी निधि छोड़ने को तैयार होते हैं

इसी प्रकाश को पाकर 'राजा' राज को छोड़ देता है तथा आनन्द विभोर सदैव के लिये हो जाता है। डाका डालने वाला डाका डालना सदैव के लिये छोड़ देता है। ईसामसीह ने इसी प्रकाश को पाया था। इसी प्रकाश को श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को दिया था जो कि उस आनंद को नहीं बर्दास्त कर सके। मुहम्मद को नूर दिखाई दिया जब खुदा की आवाज सुनाई दी जिसे खुदा का कलमा कहते हैं। यह हम सब भूल गये हैं।

आज इस अध्यात्मवाद की जरूरत है

इस समय भारतवर्ष में इस आध्यात्मवाद, की जरूरत है। भविष्य में लोग इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में आगे बढ़ेंगे यह चैलेन्ज व खुद का अनुभव है। लोग अपना विश्वास खो दिए। अगर राम कृष्ण शंकर काशी के, ब्रह्मा पुस्कार के, पार्वती हिमांचल की, विष्णु गया के आकर एक कतार में खड़े हो जांय व यह कहें कि हम सभी उस समय के हैं, तो कभी भी विश्वास करने के लिए तैयार नहीं न उस समय उन पर विश्वास किया। पुस्तकें इस बात की गवाही देती रहीं। तो इस समय किसी को पहिचाने का प्रश्न नहीं है। इस लिए अपने पर विश्वास करो विश्वास न रहने के कारण, वर्ण वर्ण में युद्ध, धर्म धर्म में लड़ाई, मनुष्य मनुष्य में, पति पत्नी में लड़ाई, समाज समाज में विरोध फैल गया है। धर्म व वर्ण का पतन हो गया। यह तभी अपने जगह पर आएगा

जब कि आत्म विद्या का प्रकाश कर अपने पर विश्वास रखा जाय। यह विश्वास मौजूदा महात्माओं से ही मिला करता है वह इसी काम के लिए आते हैं। वह अपना कार्य कर वापस चले जाते हैं। जो जीवन मुक्त हो गये, उनके आने व इन्तजार करने की बात नहीं है क्योंकि वह आवागमन से रहित हैं, इसलिए आने वाली विभूतियों से अपना सम्बन्ध जोड़े।

गोस्वामी जी ने पाया तब वर्णन किया

जब गोस्वामी जी की उमर २५ वर्ष की थी तब भगवान को प्राप्त कर इस दुनियां में ८१ वर्ष की आयु तक रहे। लोगों को जवानी की उमर में परमात्मा प्राप्त करने का संकेत किया जब कि पिछले महात्माओं ने जवानी की उमर में ही परमात्मा की प्राप्ति किया जिसका उल्लेख अपने किताबों में कर गए हैं। इन तमाम लोकों का दर्शन मरने के पहिले इसी शरीर में बैठ कर दोनों आँखों के पीछे वाले सुराख से अपनी गंदगी हटा कर किए।

कोई भी प्राप्त कर सकता है

फिर जब १२ साल की लड़की की आंख खुल कर स्वर्ग बैकुण्ठ दिव्य लोकों के प्रकाश मान महलों तथा सृष्टि को देख सकती है जो कि यहां बैठ सकता है तो आप क्यों नहीं पा सकते हैं। आप हताश न हावें मैं आप लोगों को देने के लिए आया हूँ। मुझे आप से कुछ नहीं चाहिए। मैं किराये पर नहीं चलता हूँ। इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए राजाओं ने राज्य छोड़ दिये। तो किसी वस्तु के पाने का सवाल ही नहीं है।

आप गृहस्थी में रह कर प्राप्त करें

आज का युग साधु बनने का नहीं है। समय समय पर कानून महात्माओं द्वारा प्रकाशित हुआ करता है। अपनी अपनी जगह पर रह कर परमात्मा की प्राप्ति कर लें। जीव मन के वश में, मन इन्द्रियों के वश में तथा इन्द्रियाँ भोगों के वश में फँसी हुई हैं। इनकी ही कुर्बानी करनी थी न कि भेंड़, बकरियों, गायों या पशुओं की कुर्बानी करती थी।

मैं कोई ग्रन्थ नहीं पढ़ा हूँ। यह सारी विद्या गुरु के चरणों में बैठ कर मिली जो कि सभी ग्रन्थों में मिलती है। किताबों की विद्याओं से काम, क्रोध, लोभ-मोह-अहंकार नहीं जाता है, जो कि चौरासी ले जाने का मार्ग है। यह सब जब वह मणि जलती है तो सभी विकार जल जाते हैं।

खान-पान ठीक न होगा तो सब बेकार

मन्दिरों में मैंने मांस व शराब खाते-पीते देखा है। पूछने पर कहा कि भगवान ने नहीं कहा था लेकिन डाक्टरों ने बताया था। इस प्रकार के लोगों का असर दुनियां पर क्या होगा। इन तमाम वस्तुओं को छोड़ कर इस मैदान में उपस्थित हों। कोई आन्दोलन करने की जरूरत नहीं है पहिले अपने आप को देखो। सभी अपने तरफ देखें व सुधार करें। नहीं तो अवतारी शक्तियां हो रही हैं जो इसकी उचित व्यवस्था करेंगी।

Scanned by CamScanner

आज के अखबार

वह पत्रकारों की ड्यूटी थी कि वह इस धार्मिक प्रवचन को दुनियां के सामने रखने। इतने बड़े हो रहे समारोह का किंचितमात्र भी प्रकाश नहीं है। मालूम होता है शहर में कोई बात नहीं है। एक साल बाद अपने आप इस बात को बड़े रूप में प्रकाशित करते रहेंगे। चारो तरफ मेरी ही चर्चा रहेगी। लेकिन समय का इन्तजार है।

आगे समय आ रहा है

एक समय ऐसा आ रहा है कि ये बच्चे आप को इस मैदान में पकड़ कर प्रवचन सुनने के के लिये ले आयेंगे और बताऊंगा कि आप को अब क्या करना है। कोई डिग्री लेनी हो या कहीं जाना है तो समय लगता ही है। इसलिए समय का इन्तजार है। फिर गोस्वामी जी का दोहा पढ़ते हुये यह कहा कि दिव्य दृष्टि के बदले में कोई भी चीज नहीं दिया जा सकता है। यह पैसे व सामानों से नहीं खरीदा जा सकता है। यह सब अपने अपने गुरु के सन्देशानुसार बांट रहा हूँ। सभी बुरी चीजें छोड़ दो तुमको भी मरने के पहिले ज्ञान चक्षु मिल सकता है। सब भूखे व अशांत हैं इसलिए समय दो आन द लो।

जयगुरुदेव अखण्ड प्रार्थना समारोह

हमें विदित करते हर्ष हो रहा है कि हम लोग समस्तीपुर तथा बशवारा के सभी सतसंगी भाई और बहनों ने 'जयगुरुदेव अखण्ड प्रार्थना समारोह' का आयोजन रविवार दिनांक २६-१-६८ के सबेरे ८ बजे से सोमवार दिनांक २६-२-६८ तक सफलतापूर्वक किया। तत्पश्चात आरती हुई तथा जयगुरुदेव की ध्वनि से सारा वायुमंडल गूंज उठा। फिर प्रसाद वितरण के साथ समारोह का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

यह समारोह सतसंगी भाई श्री जमुना प्रसाद सिन्हा के तत्वावधान में बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। अखण्ड प्रार्थना चौबीसों घण्टे भिन्न स्वर से तथा भिन्न-भिन्न टोली द्वारा सम्पन्न हुआ एवं जयगुरुदेव की ध्वनि से सभी उपस्थित जन समुदाय हर्ष और उल्लास के श्रोत में श्रोत प्रोत हो गए। मंच की सजावट भी अति आकर्षक थी। ऐसा सभी भाई और बहनो को अनुभव हो रहा था कि सारा वातावरण आनन्द से लहरा रहा है। इसे सफल बनाने में सभी भाई और बहनों ने अन्तर्यामी गुरु की दया का आभास महसूस किया।

श्री भोलानाथ सिन्हा
३६० ए०, गल्फ फिल्ड कालोनी
पूर्वोत्तर रेलवे, समस्तीपुर
जिला दरभंगा (बिहार)

[अकसर ऐसा देखने में आता है कि सन्त शरण मिलने के बाद भी लोग सांसारिक जोश उमंग में आकर अन्तरी साधना कम कर देते हैं। फिर बाहरी क्रियाओं को ही अधिक महत्व देने लगते हैं। रात रात भर प्रार्थनायें गाना या अखण्ड कीर्तन इत्यादि ऐसे ही कार्य हैं। जोते जागते पुरुष तब चेताते हैं कि अरे भाई, दुनियां तो इन बाहरी कार्यों में उलझी ही थी तुम भी इसी में लगोगे तो क्या पावोगे? तुम्हें तो अन्तर की साधना करनी थी। कर्म की धुलाई करनी थी तथा इस मालिक के अमूल्य धन को प्राप्त करना था। इसलिए सतसंगियों को गुप्त में साधना देर तक लगन से बैठने की स्पर्धा होनी चाहिये गुरु के श्री चरणों में सेवा की स्पर्धा होनी चाहिये न कि बाहर के फैलाव की।

ईश्वर प्राप्ति का उपाय

(बाबागाड़ा गोरखपुर का सत्संग दिनांक १३-१०-६७)

अबोध बच्चे का उदाहरण

इस संसार में जब बच्चा पैदा होता है तो कुछ भी नहीं जानता है। वह नहीं जानता कि कौन मेरे पिता हैं कौन मेरी मां है कौन मेरे भाई बहिन हैं। वह यहां किसी चीज को नहीं जानता। स्वयं में मस्त रहता है। जब भूख लगती है तो रोता है नहीं तो अपने में ही सन्तुष्ट रहता है। वह बच्चा अबोध रहता है। मगर जब उसे लोग बताते हैं तो उस पर विश्वास कर लेता है।

ईश्वर पर भी इसी प्रकार

तुम भी इसी प्रकार ईश्वर के प्रति कुछ भी नहीं जानते हो। वह ईश्वर को प्राप्त महात्मा तब जो बताते हैं उसपें अन्ध विश्वास करना होगा। उसे उसी प्रकार मानना होगा तब तुम्हें उस प्रभु की जानकारी और प्राप्ति होगी।

इस संसार में उस ईश्वर के प्रति जो अन्धे हैं कुछ भी नहीं जानते हैं उन्हें महात्मा महा पुरुष आकर जगाते है। कबीर दास जी गोस्वामी जी आदि महात्माओं ने इस संसार में आकर जगाया। उस क्रिया को बताया जिससे वह प्रभु जाना जाय।

सन्त की बात

सन्त महात्मा स्वयं बड़े निर्मल और पवित्र होते हैं उसी प्रकार उनकी हर बात और उनके हर काम निर्मल और सच्चा तथा सरल होता है। उनकी सरल तथा सच्ची बात को हम नहीं जानते हैं इससे हम उन पर विश्वास नहीं करते तब अपनी अनसमझता में हम शिवनेत्र और ज्ञान चक्षु के बारे में भी कहते हैं कि यह सब नहीं होता। लेकिन अगर हम सन्त की सरल भाषा पर विश्वास करके जब उनके बताये मार्ग पर चलें और ६ माह या साल भर उस क्रिया को करें तो उसका लाभ मिलता है। तब अनुभव भी होता है तब पूरा विश्वास भी होता है। गुरु के उस मार्ग की साधना करने से फिर ऋद्धि सिद्धि सब प्राप्त हो जाती है तब आनन्द भी प्राप्त होता है और ज्ञान की प्राप्ति भी होती है। परन्तु प्रारम्भ में तो अन्ध विश्वास मानना ही पड़ेगा।

प्रारम्भ में अन्ध विश्वास

संसार के भी जो काम करते हो वह अन्ध विश्वास से ही करते हो जैसे रिक्शे पर बैठे तो यह अन्ध विश्वास करके कि यह रिक्शा चलाने वाला ठीक ढंग से ही रिक्शा चलायेगा। वह ठीक से चलाना जानता है। मोटर पर बैठते हो तो तुम यह नहीं जानते कि इसका ड्राइवर कैसा है और कैसा नहीं पर तुम अपने को उसके हाथों में सौंप देते हो। जब मोटर चलने लगी तो तुमने अन्ध विश्वास किया कि वह तो ठीक चलायेगा

Scanned by CamScanner

ही। अब अगर वह गड्ढे में गिरा दे तो क्या पता।

तो जब रोज के काम में पल पल अन्ध विश्वास करते हैं तो फिर उस प्रभु के प्राप्ति के लिये अपनी आत्मा के कल्याण के लिये क्यों न अन्ध विश्वास करें। जब अन्ध विश्वास करके किसी के बताये मार्ग पर लग जावोगे तो उस प्रभु को प्राप्त भी कर लोगे।

मन स्थिर होना चाहिये

अब रह गया यह कि उस अन्तर के भेद को उसके रस को प्राप्त करने के लिए, वह सूक्ष्म वस्तु और वह सूक्ष्म रचना देखने के लिए अन्तर में शुद्धि होनी चाहिए। अन्तर की आंख को साफ करने का उपाय है साधन। साधना करने से अन्तःकरण साफ होगा। अन्तर की आंख, शिवनेत्र, ज्ञान चक्षु साफ होगी तब सब अन्तर की रचनायें दिखाई पड़ने लगेंगी।

अन्तःकरण साफ न होने पर

जब मन, चित्त, बुद्धि इत्यादि ठीक काम नहीं करते अर्थात अन्तर में नहीं लगते तो नुकसान अपनी जीवात्मा का ही है क्यों कि काम तो तभी होगा जब ये सब अंग ठीक काम करेंगे।

अदले बदले

एक बार मैं जफराबाद स्टेशन को आ रहा था। इक्के पर सवार था। रास्ते में वह घोड़ा थोड़ा अड़ गया। तो एक वान ने उसे मारना शुरू किया इतना मारा इतना मारा कि हम लोग बहुत मना किए पर वह माना ही नहीं। मैंने कहा कि देखो वह अपना इस जन्म का बदला चुका रहा है। घोड़ा गिर गिर पड़ता हम लोग उतर कर चले आए पर वह उसे मारता ही रहा।

तो यह कर्म के अदले बदले इस संसार में बराबर चुकाने पड़ेंगे। इनसे छुटकारा नहीं मिल सकता है। ये अदले बदले तो राम और कृष्ण को भी चुकाने पड़े थे।

आलीशान मनुष्य शरीर

जब तक यह मन, चित आदि सब गन्दे हैं तब तक सूक्ष्म बातें समझ में नहीं आतीं। तब यह नहीं समझ पाते कि कितना आलीशान यह हमारा मनुष्य शरीर हमें मिला है। इस अनमोल शरीर को, जिसके लिए देवता भी तरसते रहते हैं, हम पाकर भी इसकी कीमत को नहीं समझते हैं। इसी शरीर में रह कर बुद्धि मिलती है विवेक मिलता है जिसके उपयोग से हम उस प्रभु के भेद को जान समझ कर साधना करते हैं और फिर प्राप्त कर लेते हैं।

प्रभु प्राप्ति के महात्मा

उस प्रभु को प्राप्त किये हुये महात्मा सदा इस पृथ्वी पर रहते हैं। वे भी हमारे ही तरह से रहते हैं वे इसी तरह खाते पीते पहनते ओढ़ते हैं। पर फर्क यह रहता है कि उनका अन्तःकरण शुद्ध और साफ रहता है और हमारा गन्दा रहता है। वे सब कुछ के जानने वाले होते हैं हम कुछ नहीं जानते। वे सर्व शक्ति सम्पन्न होते हैं हमारे में कोई शक्ति नहीं रहती वे सदा प्रकाश में रहते हैं हम अन्धकार में रहते हैं। ऐसे ही महा पुरुष जब मिलते हैं तो वे उस प्रभु के भेद को बताते हैं, उसके पाने का मार्ग बताते हैं तथा उस प्रभु को प्राप्त भी करा देते हैं।

जीव अज्ञान

जब वह जीव अज्ञान कभी भाग्य से उनके दर्शन करता है तथा उसको सब बातें समझ में

आने लगती हैं तो वह उन महात्मा से अपना वह असली प्रेम पाना चाहता है उनसे प्रेम करने लगता है जिससे उसे वह सदा का आनन्द फिर मिल जाय।

लेकिन यह भी देखा गया है कि सर्व समरथ महापुरुष जब कभी अपने जन्म स्थान में जाते हैं तो उनके समय के लोग उनके गुण अवगुण को तो समझते नहीं हैं। बचपन की बातों की याद करके उनका कोई महत्व नहीं देते हैं और न उनसे लाभ ही उठा पाते हैं। इसी से गोस्वामी जी ने कहा है—

तुलसी वहाँ न जाइये जहाँ जन्म को ठाँव।
गुन अवगुन समझैं नहीं धरैं पाछिलो नाँव॥

लोग उनके गांव वाले जब भी उनकी प्रशंसा सुनते तो यही कहते कि 'अरे, वही राम बोला न"

लोहिया का ख्याल

कुछ समय पहले डा० लोहिया आश्रम पर आये थे। उन्होंने बात करके परमार्थ को समझा और उनसे जब बताया कि समाज तथा देश का सुधार राजनीति से नहीं हो सकता। जब तक लोगों का नैतिक स्तर न सुधरेगा तब तक कोई सुधार न होगा। आम के पेड़ में इमली कभी भी नहीं फल सकती। जैसा बीज होगा वैसा ही फल लगेगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि किसी पेड़ में कोई दूसरा फल लग जाय। राजनीति एक ख्याल है। उससे लाभ कुछ नहीं मिलता। आप परमात्मा को याद करें। तो उन्होंने बात को समझा और कहने लगे कि अब अवश्य अपनी आत्मा के लिए भी कुछ करूंगा। पर देखो वे मर गये।

किसी को नहीं मालुम कि कब आप खतम हो जायेंगे। इसलिये आत्मा का कार्य तो फौरन करना चाहिये। यह भव सागर रूपी समुन्द्र है। इसमें जब स्वाँस की पूंजी समाप्त हुई तो वह मनुष्य वहीं गिरा और खतम। इस प्रकार यह मनुष्य अनमोल शरीर यों ही खतम हो जाता है। जो मनुष्य अपनी आत्मा के लिए मनन चिन्तन नहीं करता वह उसका हनन करता है।

फलदार वृक्ष

जब पेड़ में फल आते हैं तो वह झुक जाता है। इस प्रकार जब पेड़ फल देने को होते हैं तो झुक कर देते हैं तो फिर मनुष्य को तो अपने गुण से अच्छा फल यानी भलाई देना ही चाहिये उसे नम्र तथा दीन होना ही चाहिये तथा अपनी भलाई और कल्याण करना ही चाहिये।

यह संसार तो एक बड़ा मैदान है। यह एक ट्रेनिंग सेन्टर है इसमें जो भी आया उसे कुछ करना ही है। इसमें कौन पास होता है और कौन फेल। यदि सफल होना चाहते हो तो जैसे ही सन्देश मिले फौरन आकर उनके बताये मार्ग पर काम करना चाहिये।

चोर कभी नहीं लखपति होते

इस संसार में सभी धनी होना चाहते हैं। मगर जो अपने अच्छे कार्य करके धन कमाता है वह अवश्य धनी हो जाता है। मगर चोरी बेइमानी से कोई न कभी धनी हुआ न होगा। क्या आपने कभी सुना है कि चोर लखपति या करोड़पति हुआ है? लेकिन देखा कि सेठ साहुकार तो लखपति भी होते हैं और करोड़पति भी होते हैं। इसलिए सही ढंग से जीवन यापन करना चाहिये। सदैव अपना काम करने की फिक्र करो। अच्छे कर्म करोगे तो अच्छा फल पाओगे। इस संसार में जो लोग बैल की तरह काम करते हैं और अपने सब परिवार का पालन पोषण करते

हैं। और अपने सब परिवार का पालन पोषण करते हैं किन्तु अपनी आत्मा के लिये कुछ नहीं करते तो उनके लिये कहा जाता है कि मरना जरूर है। और मरने के वक्त न पति काम आयेगा न पत्नी ही। उस समय कोई काम नहीं आयेगा।

ईश्वर की याद जरूरी

तो ईश्वर की याद करना बहुत जरूरी है। ईश्वर की याद में ही आनन्द है उसी में चैन है। देखो इस बार तो गल्ला खेत में दे दिया आगे पता नहीं देगा या नहीं। हम यही सब बताने आये। पता नहीं आगे क्या परिस्थिति बने और फिर यह अवसर तुम्हें मिले या न मिले।

भजन करना है कर्रा काम

लेकिन यह दुनियां ऐसी अजीब है कि संसार के कठिन से कठिन काम करने में नहीं हिचकेगा। मगर भजन करने को कह दिया जाय तो कहता है कि यह तो नहीं होगा।

एक बार नानक जी के समय में अकाल पड़ा। लोग बहुत ही परेशान थे। खाने बिना मर रहे थे। कुछ लोग नानक जी के पास पहुंचे और अपनी परिस्थिति बताई। नानक जी ने कहा कि मेरे यहां आ जाओ। केवल दो घण्टे काम लेंगे और कुछ नहीं। बदले में भोजन मिलेगा। उन आदमियों ने सोचा कि यह तो बड़ा अच्छा है। वे उनके आश्रम पर आ गये। नानक जी ने उन्हें भजन करने की विधि बताकर कहा कि यही भजन प्रतिदिन दो घण्टे करना है।

दो चार दिन बीते तो वह आदमी फिर नानक जी के सामने हाजिर हुये। वे कहने लगे कि महाराज दुनियां का जो काम कहें वह कर मगर यह भजन नहीं करूंगा।

बताओ, कि जो अपनी आत्मा का निज का काम है उसे ... में यह बात कहता है। असल में यह है कि मन तो इस संसार में पसर गया है। अब जब तक इसे सिमटा कर गुरू के चरणों में न लगाया जाय तब तक भजन हो तो कैसे हो। संसार की विषय वासनायें जब तक मन में भरी रहेंगी तब तक भजन कैसे होगा। लेकिन अभ्यास करते करते मन लगने लगता है।

इसलिये दृढ़ निश्चय करो कि साधना में ढाई घण्टे नित्य अवश्य देंगे।

खान पान शुद्ध करो

आज कल लोग खान पान में कोई विचार नहीं करते हैं। इसी से अनेक प्रकार के रोग और बिमारी संसार में फैली हुई है। शहर के लोगों में विशेष रूप से बीमारियों की अधिकता है। शहर में डाक्टर भी बहुत हैं लेकिन कस्बों में नहीं हैं। जैसे जैसे रोग बढ़े हैं डाक्टर भी बढ़ते जा रहे हैं। जब तक लोग खान पान का विचार नहीं करेंगे तब तक न रोग कम होंगे न कष्ट कम होगा।

इन खान-पान की गड़बड़ियों का असर आगे पता चलेगा। हर कर्म का फल तो भोगना ही पड़ता है। जब काल कराल कर्मानुसार बोटी-बोटी काटता है तब पता चलेगा। तब कर्म के साथ एक ब्याज भी चलता है। उसका भी भुगतान करना होगा। वर्ना अपना खान-पान सात्विक ... बनाओ। तब विवेक जाग्रत होगा और प्रभु की ओर चल सकेंगे।

इन्सानो तुम अब होश में आओ

इन्सानों अब तुम होश में आओ,
जुल्मी जालिम का होता है अब अन्त ॥टेक॥
मुरगी मछली बकरी, गऊ हिरन और बैल,
सुअर भैंस कछुआ, मेढक औरो भेड़,
और बहुत से जीव हैं, जिनका नाम है रहें,
जिनको तुम दुख पहुँचाओगे, खुदा जायेगा रूठ।....
इसका है इन्साफ कचहरी,
पकड़ फरिश्ते ले चले,
पहुंचाऐंगे खुदा कचहरी में,
तब होगी सबकी हाय हाय,
ऊपर नीचे दायें बायें, मचा रहे कोहराम ...
अपने अपने बदलों का, मांग रहे चहुँ ओर,
हाथ पैर से कटे हुये हैं,
खूनों से जो लिसे हुये हैं,
चीख चीख कर बिलख रहे हैं,
रो रो कर सब दिखा रहे हैं,
पुकार सबकी हो रही है,
बदला अपना अपना मांग रहे हैं....
हाजिर किए गये दरबार में,
हाजिर धनी सुनो दरबार में,
किये कसूरों की सुनो पुकारें,
बदला मांगें करें पुकारें,
इन्साफ धनी अब कर रहे हैं....
हम क्या करें सुनो अब धनी,
जो तुम किया सुनो अब धनी,
जो जो किया उसे पाना होगा,
बहुत लोगों को हमने भेजा,
गद्य पद्य बहुत लिखवाया,
धर्म उपदेश बहुत लिखवाये,
न्याय अन्याय बहुत बतलाये,
जात पांत का भेद बतलाया,
नारी माता बहन समझाया,
पुत्र पुत्री पिता बतलाया....
चोरी जारी निन्दा बताई,
दुख सुख जन्म मरण बताया,
नर्क स्वर्ग चौरासी बताई,
शुभ अशुभ पाप पुन्य बतलाया,
कर्म धर्म और फल को बताया ...
राम कृष्ण बौद्ध और जैन ईसा,
कबीर रैदास गोस्वामी मीरा,
नानक नाभा दरिया स्वामी,
समय समय पर सबको भेजा,
ज्ञान उपदेश सुना नहीं तुमने,
मन तरंग में बहते तुम,
भूल गये मरने को अपने,
हम को भी नहि जाना तुमने ...
अब जो किया पाप तुम सोई,
किये हुये को क्या पछतावा,
जाओ अब रोने के स्थान,
जो किया वसी को पाओ,
हमने सन्तों को भेजा है,
अधिकार पूर्ण जो उन्हें दिये हैं,
तुम सब उनके जाओ पास,
माफी अपनी उनसे करा लो,
जिन जिन को वह माफ करेंगे,
उनसे हम नहिं बोले अलग रहेंगे ...
जय गुरुदेव सब को समझावें,
वक्त अभी है जल्दी आओ।

Scanned by CamScanner

गुरू की दया प्रेमियों के अनुभव

लालच आई तो गुरूदेव सामने मिले

१४ जनवरी को प्लेट फार्म पर एक खादी भण्डार का छपा झोला मिला। मैंने उठा लिया। अपने दफ्तर में ले गया। वहां जाकर उसे खोला। उसमें एक कोरी धोती में लपेटे हुए कुछ परामठें मिले तथा दूसरी ओर १२००) रुपये के नोट मिले। मेरे पास वहां कोई न था। क्षण-मात्र को माया ने घेरा परन्तु तत्काल सामने गुरू महराज जी को पाया। माया का जाल दूर हो गया। प्रकाश सामने आ गया। झोला मय नोटों के सेफ में बन्द कर दिया फिर उसके मालिक की तलाश की। गुरु कृपा से वह भी मिल गये। वह चार आदमी थे। उनमें से एक का कहना था कि हम लोग बैल खरीदने जा रहे थे तथा मैं अपनी घर वाली का जेवर बेच कर ४००) लाया था। अगर यह रुपये न मिलते तो मैं अपने घर वापिस न जाता। यह सब सुनकर कृपा साक्षात् दिखाई पड़ी। प्रसन्नता से आंखों में आंसू निकल पड़े। तथा मुख से जयगुरुदेव निकला। इस प्रकार गुरुदेव जी सदैव साथ नजर आते हैं। भगवन ऐसी ही कृपा दृष्टि की आशा है जिससे अपने पथ पर चलता रहूँ।

प्रार्थी-सेवक गुलफाम
स्टेशन मास्टर बाजपु
जिला-नैनीताल

प्रपत्र ४

समाचार पत्र पंजीयन (केन्द्रीय) कानून, १९५६ के आठवें नियम के साथ पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन कानून की धारा १९ 'डी' उपधारा 'बी' के अन्तर्गत अपेक्षित 'अमर सन्देश' नामक मासिक पत्रिका से सम्बन्धित स्वामित्व और अन्य बातों का ब्योरा—

१—प्रकाशन का स्थान :	२३, पाण्डे बाजार, आजमगढ़
२—प्रकाशन की आवर्तिता :	मासिक
३—मुद्रक का नाम :	विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल
राष्ट्रीयता :	भारतीय
पता :	२३, पाण्डेबाजार, आजमगढ़
४—प्रकाशक का नाम :	स्वामी तुलसी दास जी
राष्ट्रीयता :	भारतीय
पता :	चिरौली सन्त आश्रम, कृष्णनगर, मथुरा टेलीफोन नं० २४१
५—सम्पादक का नाम :	विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल
राष्ट्रीयता :	भारतीय
पता :	२३, पाण्डे बाजार, आजमगढ़
६-कुल पूंजी के एक से अधिक शेयर वाले भागीदार :	चिरौली सन्त आश्रम, कृष्णनगर मथुरा।

मैं, तुलसी दास, घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

दिनांक १८ मार्च, १९६८

तुलसी दास
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Scanned by CamScanner

स्वामी जी सब जगह रहते हैं

मैं दिनांक ३-३-६८ को सुबह ६ बजे दरवाजा बन्द करके अन्दर से सिकड़ी भली भांति लगा कर सुमिरन करने बैठा ४ माला पूरा हो चुका ज्योंही ५वां माला शुरू किया एक सांसारिक प्रेमी साथ में एक आदमी लेकर दरवाजे पर आकर गुरुदेव बाबा कहकर पुकारने लगा। पड़ोस के एक आदमी ने कहा कि साधन पर बैठे होंगे मत बोलाइये। उसने कहा कि बिना भेट किए मैं नहीं जाऊंगा। इतने में अपने आप सिकड़ी अन्दर से खुल गई और जो प्रेमी बाहर खड़ा था वह बोला हमको ऐसा मालुम हुआ कि किसी साधुने सिकड़ी खोला है। मेरे क्वाटर वो इधर उधर देखा मेरे सुमिरन पूरा करने के बाद उसने कहा कि एक साधु बाबा को मैंने दरवाजा खोलते देखा है कहां गए? धन्य हो मेरे मालिक आप की महिमा कैसे की जाय अपने जीवों के साथ आप का कितना प्यार है।

ध्रुवदेव मिश्रा
जूट मिल सहजनवा, जि० गोरखपुर

माह के खर्च में ही पूरा हुआ

बात कुछ पुरानी है जब मैं पुलिस चौकी फर्टिलाइजर गोरखपुर में तैनात था। मैं अकसर सोचा करता था कि मैं पुलिस का अति गरीब तुच्छ व नीच व्यक्ति हूँ अगर मेरे यहां भी सतसंग होता तो मुझे बड़ी खुशी होती और जो भाई गोरखपुर से मेरे यहां आते उनको प्रेम के साथ भोजन व जलपान कराता। यह बात बराबर सोचा करता किन्तु अपनी गरीबी को और साथ ही साथ कमर तोड़ महंगाई को सोच कर बड़ा दुखित होता था। लाचारी बस सन्तोष करता था।

एक इतवार को गुरु महाराज ने इच्छा पूरी कर दी। धन्य हो प्रभु! इतवार के सतसंग में प्रार्थना किया और वह मन्जूर हो गई। इजाजत मिली कि शाम को आप के यहां सतसंग होगा।

शाम को सतसंग हुआ और इतनी दया की बरसात हुई कि सब सतसंगी तर हो गए। मेरे पास केवल २५) था वह भी महीना भर के खाने पीने के लिए रक्खा था। उसी में कुल मिलाकर ४० सतसंगी लोगों ने भोजन व जलपान किया और मेरे पूरे महीने खाने की भी कमी न हुई। जैसे पहले भोजन करता था वैसे ही उस महीने में भी भोजन किया।

यह गुरु सतगुरु दयाल स्वामी जी की बहुत बड़ी दया हुई नहीं तो इस कड़ाके की महंगाई में यह काम उतने ही खर्च में होना असम्भव था। धन्य हैं वे गुरु दयाल।

राममिलन तिवारी
गोरखपुर

बूंद बूंद विचार

जब प्रेमियों के अनुभव गुरु की दया के सम्मुख आते हैं तो अकसर लोग सोचते हैं कि ऐसा तो होता ही रहता है इसमें कौन सी खास बात है। परन्तु सतगुरु के श्री चरणों में रह कर जो ये अनुभूतियाँ होती हैं वे साधारण नहीं हैं देखने में भले ही साधारण लगें। भाव में ही सब कुछ है। गुरु पावर की अपार शक्ति किस व्यक्ति से क्या और कब काम लेगी यह तो अनुभव शील साधक गुरु प्रेमी ही समझ पाते हैं। गुरु के चमत्कार देखना चाहें तो वैसा ही विचार बनावें आपको भी ये अनुभव होने लगेंगे।

Scanned by CamScanner

गोरखपुर का सतसंग विवरण

(जो वहाँ के स्थानीय लोग आपस में इकट्ठे हो कर करते हैं)

दिनांक	दिन	समय	नाम तथा स्थान	लगभग उपस्थिति
२१-१-६८	रविवार	७॥ से ६॥ सुबह	बिस्कुट फैक्टरी	१२१
२१-१-६८	रविवार	१ से ३ तक दिसे	श्री राम सज्जन, ग्राम औरहिया	५०
२१-१-६८	रविवार	७ से ९ रात	" गणेशी लाल अग्रवाल, गोलघर	१२५
२३-१-६८	मंगलवार	७॥ से ९। रात	" गिरिजा शकर लाल श्रीवास्तव	५०
२५-१-६८	बृहस्पतिवार	७॥ से ९। रात	श्री के० बी० प्रसाद फोरमैन	२००
२६-१-६८	शुक्रवार	७ से ९ रात	,, कृपा शंकर श्रीवास्तव एकाउटिङ्ग विभाग	५०
२८-१-६८	रविवार	७॥ से ९ सुबह	बिस्कुट फैक्टरी	२००
२८-१-६८	रविवार	३ से ५ दिन	माता जी बसन्त पुर	६५
३०-१-६८	मंगलवार	७॥ से १० रात	पेशकार साहब तिवारीपुर	८०
१-२-६८	बृहस्पतिवार	७॥ से ९ रात	श्री के० बी० प्रसाद फोरमैन	२५०
४-२-६८	रविवार	७॥ से ९ सुबह	बिस्कुट फैक्टरी	३५०
४-२-६८	रविवार	१ से ३॥ दिन	श्री पन्ना लाल मझगावां	५०
४-२-६८	रविवार	३॥ से ५ दिन	श्रीमती फुलबासी देवी फुलवरिया	३०
६-२-६८	मंगलवार	७॥ से ९। रात	बिस्कुट फैक्टरी	१२५
७-२-६८	बुधवार	७॥ से ८॥ रात	मुंशी जी मियां बाजार	५०
८-२-६८	बृहस्पतिवार	७॥ से ९ रात	श्री के० बी० प्रसाद फोरमैन	२२५
१०-२-६८	शनिवार	७॥ से ११ रात	श्री चन्द्रिका सिंह ग्राम टिकरिया	४००
११-२-६८	रविवार	७॥ से ९ दिन	बिस्कुट फैक्टरी	३५०
११-२-६८	रविवार	११ से १२ दिन	श्री मणिराम भट्ट फर्टलाइजर	२५
११-२-६८	रविवार	३ से ४॥ दिन	श्री कन्हई यादव, ग्राम बिछिया	१००
१३-२-४८	मंगलवार	७॥ से ९ रात	" सतगुरु प्रसाद, सुभाष नगर	१००
१५-२-६८	बृहस्पतिवार	७ से ८॥ रात	,, के० बी० प्रसाद फोरमैन	२००
१५-२-६८	बृहस्पतिवार	९ से रात १०॥	" गोपाल पण्डित, सुभाष नगर	६०
१६-२-६८	शुक्रवार	७॥ से १० रात	" शंकर लाल श्रीवास्तव	१००
१७-२-६८	शनिवार	७॥ से ९॥ रात	कार्यालय, जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ	१००
१८-२-६८	रविवार	७॥ से ९॥ दिन	बिस्कुट फैक्टरी	५५०
१८-२-६८	रविवार	१२ २॥ दिन	श्री गोविन्द भगत, ग्राम शिवपुर गोरखपुर	२००
१८-२-६८	रविवार	८ से १०॥ रात	श्री लालराज यादव, ग्राम कुंई गोरखपुर	२५०

Scanned by CamScanner

हाहाकार मचा जग माहीं

लड़ते भिड़ते रोते धोते,
कहीं कोई भी सुख नहिं पाते।
सब जन क्रोध रूप में रहते,
कहा करें कोई प्रेम न पाते।
नर और नारी सबही झगड़े,
कहा करें कोई जतन न पावें।
खान पान सबही का बिगड़ा,
कहा करूं कोई कहनि न माने।
पीवें खावें मांस सराबा,
फिर अपनी बुद्धि बौराये।
अण्डे भी फलहार बताये
तामस राक्षस गृह में आये।
कौन करे अब जीव उपकारा,
भविष्य हमार हुआ अन्धकारा।
चौरासी में सब जीव जाते,
त्राह त्राह कर अब सब रोते।
खावें जम की महा तिरासें,
मारें पीटें बहु धमकावें।
जलते बांधे अगिन खम्भ में,
जीव बहुत अति दुख में रोते।
जिन जिन कों तुम बहुत सताया,
इसही से तुम यह गति पाया।
अब तुम मानो कहना मेरा,
जीवों पर अति दया कर हेरा।
करो सदा सब जीवों पर दाया,
इससे हुइहैं हृदय सफाया।
अब मत करो जीव अहारा,
अपना सा सबही को जानो।
इससे जय गुरुदेव बताते,
जो जो करो सोइ फल पाओ।

भाग्य हमारा कभी तो जागेगा

भाग्य हमारा कभी तो जागेगा,
कभी तो हमारा पुकार सुनना पड़ेगा।
दिया तो आप ने है हमको,
कभी तो हमारी तरफ देखना पड़ेगा।
किये जो हैं बुरे कर्म हमने
कभी तो इन्हें क्षमा करना पड़ेगा।
भूल हुई जो है जान अनजान में,
इस भूल को अब तो मिटाना पड़ेगा।
बिछुड़े जो हम तुमसे सदा से,
अब तो तुम्हें हमको मिलाना पड़ेगा।
न हमने तुम्हारी कभी सुनी महिमा,
अपनी महिमा अब तो बताना पड़ेगा।
तुम कौन कहां के हो हमने न जाना,
अब तो तुम्हें अपना भेद बताना पड़ेगा।
किस लोक के हो हमें न मालूम,
अब तो हमें अपना लोक बताना पड़ेगा।
मार्ग कौन सा है हमें न मालूम,
वह मार्ग अब तो हमें बताना पड़ेगा।
प्रेम करना न जाना कभी आप से,
प्रेम अब तो हमारा अपने से कराना पड़ेगा।
आप के चरनों से हम कभी न लग सके,
अब तो हमको अपने चरनों में लगाना पड़ेगा।
न नइया कभी तरने की हमने पाई,
आपको नइया पर हमें बिठाना पड़ेगा।
अब तो हम सब कुछ आपके हो चुके,
अब तो आपको हमें अपना बनाना पड़ेगा।

Scanned by CamScanner

सतसंग निर्देशिका

खण्ड-१ रविवार का सतसंग

नीचे उन लोगों के नाम पते तथा उस स्थान पर पहुँच कर मार्ग और सतसंग का समय दिया जा रहा है। जिनके यहां हर रविवार को सामूहिक सतसंग होता है।

गोरखपुर

१-बिस्कुट फैक्टरी जटा शंकर पोखरे के पश्चिम गोरखपुर, अलीनगर गेट रेलवे गुमटी के पूरब समय ७ बजे प्रातः से।

२-भाई मंगल प्रसाद विश्वकर्मा ग्राम बहुरीपार पोल्ट भैंसा बाजार गोरखपुर। गोरखपुर से १५वें मील पर स्थित है सायकाल ८ बजे से।

३-भाई राम किशोर मास्टर ग्राम जुड़ियान पोस्ट सहजनवां गोरखपुर। सायं ८ बजे से।

४-भाई जयकरन जी ग्राम केशोपुर पोस्ट सहजनवां गोरखपुर प्रातः ७॥ बजे से।

५-महावीर जूट मिल मजदूर लाइन न० ४ सहजनवां गोरखपुर। रात्रि ७॥ बजे से।

बस्ती

१-भाई सन्तबली सिंह ग्राम केसार पो० खलीलाबाद बस्ती। खलीलाबाद स्टेशन से ४ मील दूर।

२-भाई श्यामबली ग्राम जगल कलां पत्थी पर पोस्ट बघौली बस्ती। रोडवेज से १०० गज दूर।

३-भाई रामचन्द्र क्लाथ मर्चेण्ट, खलीलाबाद बस्ती सवेर के समय।

४-भाई रामअवध शुक्ल ग्राम सरदहा शुक्ल पोस्ट बेलवरिया जंगल बस्ती।

गाजीपुर

१-भाई बचई लाल श्रीवास्तव द्वारा श्री बदुक प्रसाद महाजन टोली (भटनागर भवन) गाजीपुर स्टेशन से मुन्नो लाल चौराहे से ५० गज दूर बालकृष्ण मारवाड़ी के पीछे के मकान में सबेरे ८ बजे से।

२-भाई शिवफेर सिंह ग्राम नेवादा पोस्ट नखतपुर मऊ जंकशन से दक्षिण पिपरीडीह स्टेशन से पूरब १ मील पर।

३-भाई जीतन सिंह प्रधान ग्राम सब्बलपुर खुर्द पोस्ट देवरिया, गाजीपुर। गाजीपुर सीटी से गंगापार तारीघाट से बनारस वाली सड़क पर।

आजमगढ़

१-भाई रामसमुझ लाल २३ पाण्डेय बाजार आजमगढ़। रेलवे स्टेशन से ४ मील बस स्टेशन से दो मील पर। अमर ज्योति प्रेम के पास प्रातः काल साढ़े सात बजे (स्वामी जी महराज आजमगढ़ में यहीं ठहरते हैं

देवरिया

१-भाई योगेन्द्रनाथ गौड़ वकील देवरिया राजकीय विद्यालय के सदर फाटक के पास उत्तर ओर। सायंकाल।

२-सूर्यदेव पांडेय टिकट कलेक्टर पूर्वोत्तर रेलवे भटनी जंकशन, स्टेशन के उत्तर सायं सात बजे से।

कानपुर

१-भाई गोवर्धन लाल ओमर मकान न० १२८/७२ डी ब्लाक किदवई नगर कानपुर। सेंट्रल रेलवे स्टेशन से २ मील दूर किदवई नगर चौराहे से हमीरपुर वाली सड़क पर थोड़ी दूर चलने पर बाईं ओर ४० फीट दूर सायं साढ़े तीन बजे से।

लखनऊ

१-भाई श्री राम ठेकेदार, १८ घसियारी मण्डी (लिबर्टी सिनेमा के पास गली में) लखनऊ। प्रातः ८ बजे से।

२-श्री किशुन लाल अग्रवाल गोगराज बिल्डिंग, जनता धर्म कांटा, आर्यनगर लखनऊ।

Scanned by CamScanner

हमारे प्रकाशन

स्वामी जी की रचित पुस्तकें

१	साधक बिधन निरूपण	३५ पै०
२	याद रक्खो गुरु के बचन	१५ पै०
३	प्रति दिन के विचार	३० पै०
४	परमार्थी उपदेश	५० पै०
५	सन्त मत में सच्चा निर्माण	३० पै०
६	तुलसी वाणी	४० पै०
७	यम लोक मार्ग	२५ पै०
८	ज्ञान रश्मि	३५ पै०
९	हम गुरू को कितना मानते हैं	०३ पै०
१०	अमर सन्देश फाइल सजिल्द वर्ष १	६.०० रु०
११	अमर सन्देश फाइल सजिल्द वर्ष ८	६.०० रु०
१२	अमर सन्देश फाइल सजिल्द वर्ष ९	६.०० रु०

पद्य में पुस्तकें

१	बिनती प्रार्थना संग्रह वाणी सुमन सहित सजिल्द	२.०० रु०
२	बिनती प्रार्थना संग्रह भाग ३ अलग से	५० पै०
३	वाणी सुमन	५० पै०

अंग्रेजी में पुस्तकें

१	Yam Lok Marg	३० पै०
२	Glimpses of Satsang	४० पै०

प्राप्ति स्थान,

व्यवस्थापक

अमर ज्योति प्रेस

२३, पाण्डे बाजार

आजमगढ़

Scanned by CamScanner

अप्रैल '६८ वर्ष ११, अंक १ अमर सन्देश रजिस्टर्ड नं० एल-१२७६

शिवनेत्र आज भी मिलता है

शिवनेत्र प्राप्ति का गुरु मिलना चाहिये

जय
गुरुदेव

अमर सन्देश

सतपुरुषों के वचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल वचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ़ कर सतसंग कीजिए जीवन को सात्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़ कर समय के संग आगे बढ़िये। स्वयं पढ़िये और इष्ट-मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० मधु संचय ०—

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

सेवा भक्ति और साधन

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है। गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तःकरण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है

ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से

प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर, मथुरा एवं विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित।

Scanned by CamScanner

स्वामी जी रचित पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम
१–	साधक विधन निरुपण
२–	याद रक्खो गुरु के बचन
३–	प्रति दिन के विचार
४–	परमार्थी उपदेश
५–	सन्तमत में सच्चा निर्माण
६–	तुलसी वाणी
७–	यम लोक मार्ग
८–	ज्ञान रश्मि
९–	हम गुरु को कितना मानते हैं।

१०– उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की सजिल्द ८) रु०

नोटः–अब इन पुस्तकों के जिल्द का नाम परमार्थी बचन संग्रह हो गया है। प्रेमीजन केवल परमार्थी बचन संग्रह नाम से पूरी पुस्तक को मंगा सकते हैं।

—: पद्य में :—

११–प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ४) रू०

डाक खर्च कम से कम ४) पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें। वी०पी० भेजने का नियम नहीं है।

१२–स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १२) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १२) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ६) है इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़ के पते पर भेजें।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—

व्यवस्थापक अमर सन्देश
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

अपनी बात

(१) प्रेमी पाठकों को सूचित करते हुये अपार हर्ष हो रहा है कि जयगुरुदेव अमर सन्देश पिछले २४ वर्षों से अनवरत गुरु महराज की अमृत वाणी के प्रसार-प्रचार की सेवा कर रहा है।

यह २७ वें वर्ष का सातवां अंक है। यह आप के सहयोग की पूरी अपेक्षा करता है कि आप इसके प्रचार-प्रसार में पूर्ण सहयोग दें तथा गुरु की दया के भागी बनें। अपने इष्ट-मित्रों परिवार वालों तथा रिश्तेदारों को ग्राहक बनायें। अब वार्षिक मूल्य १५) हो गया है। एक प्रति का मूल्य १)२५ है। कृपया मनीआर्डर से रूपया शीघ्र भेजें।

(२) अब ग्राहक केवल मई अथवा जनवरी माह से ही बनाये जाते हैं। कृपा कर मनीआर्डर भेजते समय अवश्य लिखें कि आप मई से ग्राहक बन रहे या जनवरी से।

(३) कृपया मनीआर्डर कूपन पर नीचे अपनी ग्राहक संख्या, नाम तथा पता अवश्य साफ साफ लिखें नहीं तो कार्यालय में बड़ी परेशानी होती है।

—व्यवस्थापक

Scanned by CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २५ अंक ७ [illegible] १९[illegible]

रजिस्टर्ड नं० Azm—4
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

अमर सन्देश

सत्पुरुषों के वचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इसलिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल वचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सात्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महाराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

* गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।
* गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।
* परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तःकरण को पवित्र बनाकर गुरु के एक एक शब्द पर [illegible] होना ही साधन है।

मधु संचय

* शिवनेत्र [illegible] भी मिलता है।
* शिवनेत्र प्राप्ति का गुरु मिलना चाहिये।
* [illegible] गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।
* ईश्वर [illegible] की [illegible] है इसी मनुष्य शरीर [illegible]।
* गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु [illegible] है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना, ही प्रार्थना है।

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या.........

श्री.........

२१-१
उमेश प्रसाद सिंह
ग्राम पो० मेहरपुर
थाना—बखरा
जिला हाजीपुर (बिहार)

[illegible] और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली संत आश्रम, कृष्ण नगर मथुरा एवं [illegible]नाथ प्रसाद अग्रवाल [illegible] अमर ज्योति प्रेस, [illegible] में मुद्रित

Scanned by CamScanner